ORIGINAL RESEARCH PAPER

Socail Science

Volume - 7 | Issue - 3 | March - 2017 | ISSN - 2249-555X | IF : 4.894 | IC Value : 79.96

"मीडिया और राजनीति"

KEYWORDS

डॉ. लाखा राम चौधरी

पीएच.डी. (लोक प्रशासन) महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)

वर्तमान समय में 'मीडिया' शब्द जनमानस में काफी लोकप्रिय है। लोकतंत्र, जनमत, जनतंत्र, जनसभ्यता, जन-शिक्षा, जन-संस्कृति और जन-सम्पर्क की सफलता के मूल में, जन संचार के क्षेत्र में हो रहे नित नूतन तकनीकी क्रांति का ज्ञान ही अब एकमात्र सहारा है। ज्ञान शक्ति है, विज्ञान महाशक्ति है और संचार विज्ञान तो एक अलौकिक शक्ति है। बहुआयामी संचार और जनसंचार अपने आप में एक विज्ञान, कला, शिल्प और प्रौद्योगिकी है।

मीडिया या जनसंचार के माध्यम किसी भी समाज या देश की वास्तविक स्थिति के प्रतिबिम्ब होते हैं। मीडिया की शक्ति का आकलन उसकी व्यापक पहुंच के मद्देनजर किया जा सकता है। लोकतंत्र में व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बाद मीडिया को चौथा स्तम्भ माना जाता है। राष्ट्र का अस्तित्व तभी तक बना रहता है जब तक उसके सभी स्तम्भ राष्ट्र के प्रति अपनी निर्विवाद एकजुटता प्रदर्शित करते हैं। इनमें मतभेद पैदा होने पर राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष खतरा उत्पन्न हो जाता है।

मीडिया से तात्पर्य जनसंचार के माध्यमों-समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन तथा चलचित्रों से है। समाचार पत्र विविध घटनाओं, समस्याओं एवं विचारों के संबंध में जनता को सूचना प्रदान करने का कार्य करते हैं और साधारणतया समाचार पत्रों में प्रकाशित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और अन्तर्राष्ट्रीय सूचनाओं के आधार पर ही जनसाधारण सार्वजनिक क्षेत्र से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार का निर्माण करता है। साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्रिकाओं में राजनीतिक जीवन और सामाजिक-आर्थिक विषयों का विस्तृत विवेचन होता है जिसे पढ़कर जनता लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अधिकाधिक भागीदारी प्राप्त करती है। लोकतंत्र जो किसी राष्ट्र की मूल संकल्पना से जुड़ा हुआ है जिसे मीडिया द्वारा सींचकर पुष्पित और पल्लवित किया जाता है। आज मीडिया की शक्ति इतनी अधिक है कि वह स्वयं ही एक सत्ता संस्थान बन चुका है। मीडिया को एक राजनीतिक शक्ति भी कहा जाता है जो लोगों के विचारों का निर्माण करता है और इस तरह मीडिया जनमत को प्रभावित भी करता है। मीडिया और राजनीति का हर दृष्टि से गहरा सम्बन्ध है क्योंकि राजनीति से संबंधित अधिकतर समाचार मीडिया में आते हैं। राजनीतिक घटनाओं का वर्णन भी किया जाता है। मीडिया को अब राजनीति का ही उत्पाद कहा जाता है क्योंकि जनता का मत बनाने में या जननीति को नियंत्रित करने में मीडिया की व्यापक भूमिका है।

मीडिया का राजनीति पर भी प्रभाव अनेक रूपों में देखने को मिलता है। मत देने वाले नागरिकों के व्यवहार को भी अंकित करता है जिससे लोगों ने अपने विचारों को बदला। इस तरह मीडिया राजनीति के क्षेत्र में विचारों को निर्मित करता है। मीडिया लोगों के विश्वासों को इतना नहीं बदलता जितना वह लोगों को मत देने के लिए सक्रिय करता है और वे अपना निर्णय लेते हैं। वह नागरिकों को अपने उम्मीदवारों के सम्बन्ध में व्यापक सूचनाएं भी देता है। भारतीय मीडिया लगातार लोगों को सेक्युलर की ओर मोड़ने की कोशिश करता रहा है। मीडिया बड़ी-बड़ी हस्तियों को सत्ता से वंचित कर सकता है। विज्ञापनों की दुनिया ने भी मीडिया के माध्यम से एक बहुत बड़ा परिवर्तन कर दिया है। यह स्वीकार कर लिया गया है कि अब तो राजनीति का भी मार्केटिंग किया जाता है। मीडिया के आगे सरकार की ताकत भी कम है।

भारत में 80 के दशक में आतंकी घटनाएं देखने को मिली, 1984 में स्व. श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या, 1991 में स्व. श्री राजीव गाँधी की आतंकी हमले में मृत्यु, 13 दिसम्बर, 2001 को संसद भवन पर हमला, 26/11 को ताज होटल पर हमला, 2016 में पठानकोट एयरबेस पर हमला, उरी में आर्मी कैम्प पर आतंकी हमला आदि को विषम परिस्थितियों में प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया ने जिस तरह जान की बाजी लगाकर सशक्त बलों के साथ कधे से कंधा मिलाकर घटनाओं का सजीव प्रसारण देश और दुनिया को दिखाया तथा आतंकवादियों के प्रति लोगों के मन में शेष सहानुभूति को बाहर निकाला, जो काबिले तारीफ था, क्योंकि इससे पहले इस देश का अल्प संख्यक वर्ग जान बूझकर राष्ट्रीय खुफिया एजेन्सियों द्वारा फँसाये जाने की बात कर रहा था। उनके नेताओं ने भी इस घृणित कार्य की काफी भर्त्सना की और मारे जाने वाले आतंकवादियों को भारतीय कब्रिस्तानों में दफनाये जाने का विरोध किया जो देश के भविष्य के लिए शुभ संकेत है इसका श्रेय मीडिया को दिया जाता है। 1999 के 'कारगिल संघर्ष' में शहीद वीर जवानों के तिरंगे में लिपटे पार्थिव शरीर उनके परिवार के पास लाये गये और उनका जिस वीरोचित सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया, इसमें मीडिया ने सराहनीय योगदान प्रदान किया। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या मजदूर, क्या किसान, जिसने जहाँ पर सुना अन्तिम दर्शन और अन्तिम संस्कार में भाग लेने के लिए उमड़ पड़ा। यह सब मीडिया की सहायता से ही संभव हुआ। काफी हद तक जाति, धर्म और सम्प्रदाय की दूरियां कम होती दिखाई दी, सभी ने एक साथ खड़े होकर सामना करने की कसमें खाई। मीडिया की मदद से ही लोकतंत्र का एक नया जोश देखने को मिल रहा है। मीडिया का व्यापक प्रभाव है और वह अब तक ऐसी शक्ति बनता जा रहा है जिस पर सरकार भी विजय प्राप्त नहीं कर सकती क्योंकि वह सत्ता से नहीं जनमत से जुड़ा है। मीडिया, उद्योग और सरकार के बीच एक ऐसा संबंध होता है जो शक्ति से भी जुड़ा रहता है।

दुनिया के तमाम देशों में हुई सामाजिक एवं राजनीतिक क्रांतियों के अलावा भारत के स्वीधीनता संघर्ष में समाचार पत्रों ने अभूतपूर्व भूमिका निभाई। पुनर्जागरण के अग्रदूत और भारतीय पत्रकारिता के जनक राजाराम मोहन राय समेत अन्य सुधारकों ने भी अपने सुधार कार्यक्रमों को विस्तार देने तथा जन-जन तक पहुँचाने के लिए समाचार-पत्रों को माध्यम बनाया। इसके अलावा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने मराठा एवं केसरी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने बंगाली, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने संवाद कौमुदी, लाला लाजपतराय ने न्यू इण्डिया, अरविन्द घोष ने वदे मातरम् तथा महात्मा गाँधी ने यंग इण्डिया एवं हरिजन के माध्यम से तथा अन्य महान् नेताओं ने विभिन्न भाषाई समाचार पत्रों के माध्यम से ब्रिटिश शासन की शोषणकारी नीतियों एवं कार्यों को उजागर किया गया उन्हें जन सामान्य तक पहुंचाया।

समाचार पत्रों को भारतीय लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माना गया है। समाचार पत्र सरकार, सरकारी नीतियों व कार्यक्रमों तथा महत्वपूर्ण निर्णयों के विषय में जनमत का निर्माण करते हैं। जनमत का प्रतिनिधित्व करने के कारण समाचार पत्रों की आवाज को सुनना तथा उस पर जरूरी निर्णय लेना लोकतांत्रिक सरकार के लिए बाध्यकारी होता है। वर्तमान समय में स्वतंत्रता पूर्व युग की नैतिक पत्रकारिता अतीत की बात बनकर रह गई है। पत्रकारिता के क्षेत्र में बढ़ती व्यावसायिकता ने समाचार पत्रों के सामाजिक उत्तरदायित्वों को किनारे रख दिया है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को अभिव्यक्ति की प्रतिबद्धता का पर्याय मान लिया गया है। पत्रकारिता आज एक लाभदायक व्यवसाय बन चुकी है, जिसमें त्याग, समर्पण, सामाजिक जागरूकता की बजाए सिफारिश एवं गुटबंदी की प्रधानता है। बढ़ती व्यावसायिकता ने जनहित की समस्याओं को पीछे धकेलकर विज्ञापन एवं चटपटी खबरों को समाचार पत्रों का मुख्य अंग बना दिया है। अधिकांश समाचार पत्रों द्वारा सामान्य जन की भाषा को तिरस्कृत करके अभिजात्य वर्गीय संस्कृति को केन्द्र में रख दिया गया है।

मीडिया के क्षेत्र में राजनीति के पूर्वाग्रह भी सामने आते हैं। समाचार पत्रों में दलगत आधार पर जो सूचनाएँ प्रकाशित होती हैं, उससे स्पष्ट होता है कि मीडिया पक्षपात करता रहता है। मार्च, 2000 में दक्षिण अफ्रीका के मानवाधिकार आयोग ने 30 पत्रकारों को अपने सामने बुलाया जिन पर नस्लीय भेदभाव को बढ़ाने का आरोप था और इस तरह मीडिया रेसिज्म की बात भी सामने आई। मीडिया का प्रयोजन यह है कि वह समाचारों के मूल्य को स्वीकार करे और समाचार जैसे मिलते हैं वैसे ही उन्हें प्रसारित भी करें। साथ ही समान दलों को समान कवरेज दिया जाए। राजनीतिक भ्रष्टाचार और कई प्रकार के स्केण्डल को जनता के सामने लाना चाहिए।

लोकतंत्र में मीडिया का प्रयोग राजनीति के पैकेज के रूप में होने लगा है। राजनीति में जनता का प्रतिनिधित्व तेजी से दलों और राजनीतिज्ञों द्वारा नियंत्रित होने लगा है और वे ही उसका प्रबंधन भी करने लगे हैं। राजनीतिक बहसें सतह पर यथार्थ की बजाय नीतियों पर आधारित न होकर वे व्यक्तियों पर आधारित हो गई हैं। मीडिया द्वारा सतह पर जनमत का ऐसा वातावरण बनाकर लोगों को भ्रमित कर दिया जाता है। अत: वह केवल सूचना देने का ही कार्य नहीं करता जनमत बनाने का कार्य भी करता है।

लोकतंत्र में समाचार माध्यमों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त है। उनके द्वारा प्रकाशित अथवा प्रसारित और उस पर की गई टीका टिप्पणियों पर किसी प्रकार की रोक नहीं लगाई जाती। अत: समाचार पत्रों से अपेक्षा की जाती है कि उन्हें मर्यादित आचरण करना चाहिए। उन्हें किसी प्रकार की अफवाह की तह तक जाकर सत्य को प्रकाश में लाना चाहिए। भारत जैसे विशाल विविधता वाले देश में अफवाहों के माध्यम से साम्प्रदायिक दंगे तक फैला दिये जाते हैं, तोड़फोड़ की कार्यवाही कर सरकारी और निजी सम्पति को क्षति पहुँचायी जाती है और कभी-कभी सत्ता परिवर्तन में भी सफलता प्राप्त की जाती है। उत्तेजनात्मक समाचारों से समाचार पत्रों की बिक्री तो बढ़ती है किन्तु इसका कोई दीर्घकालीन लाभ नहीं मिलता। मीडिया को अपने महत्व का स्वयं आकलन करना चाहिए। मीडिया को राष्ट्रहित के मामलों में हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए क्योंकि ये हित सीधे जनता से जुड़े होते हैं और यदि जनता को इस बात का अहसास हो जाये कि राष्ट्र का नेतृत्व उसके हितों के प्रति जिम्मेदार नहीं है तो यह राष्ट्र के स्वास्थ्य के लिए घातक होगा।

प्राय: किसी भी राष्ट्र की एकता और अखण्डता के समक्ष बाह्य खतरों के साथ आन्तरिक खतरों की चुनौती भी हमेशा बनी रहती है। जैसे भारत में दुनिया के सभी धर्मों के लोग रहते हैं, साथ ही 826 भाषाओं, एवं 1652 बोलियां बोली जाती हैं। जातियों की गणना तो कठिन है। ऐसे में क्षेत्रीयता, साम्प्रदायिकता, भाषा और जाति को लेकर अलगाववादी ताकतों द्वारा समय-समय पर देश को चुनौतियां दी जा रही हैं। इन परिस्थितियों में सम्पूर्ण राष्ट्र को एकजुट बनाये रखने के लिए प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया को हमेशा जी तोड़ मेहनत करनी पड़ती है जिसके बल पर भारतीय संस्कृति की प्रमुख पहचान 'विभिन्नता में एकता' कायम है।

मीडिया से यह अपेक्षा की जाती है कि समाचार सम्प्रेषण में निष्पक्षता का परिचय दें। किसी भी प्रलोभन अथवा दबाव में आकर कार्य करना, न तो पत्रकारिता के सिद्धान्तों के अनुकूल है और न ही मानवता अथवा नैतिकता है। इनके पक्षपातपूर्ण लेखों और दुर्भावनापूर्ण समाचार सम्प्रेषणों से जनमानस भ्रमित और प्रदूषित होता है। सत्ता लोलुप एवं सुविधाभोगी पत्रकारिता से न तो स्वस्थ लोकमत का निर्माण होता है औ न ही राष्ट्रीय हितों को कोई लाभ पहुँचता है। अत: मीडिया का यह दायित्व बनता है कि वह समाचार-विश्लेषण में मर्यादा, संयम और निष्पक्षता पर विशेष ध्यान दें। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को अभिव्यक्ति की प्रतिबद्धता का रूप नहीं प्रदान करना चाहिए। समाचार पत्रों के माध्यम से ही विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक समूह एक-दूसरे के दृष्टिकोण, मान्यताओं एवं अपेक्षाओं से परिचित होते हैं। इस प्रकार समाज में एक शांतिपूर्ण सामंजस्य की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती हैं, जिसमें आपसी विवादों एवं मतभेदों का निराकरण सहमतिपूर्ण ढंग से करना संभव होता है।

मीडिया का स्वस्थ विकास न सिर्फ भारतीय लोकतंत्र के लिए शुभ लक्षण है, बल्कि समाज, संस्कृति और सद्भाव के लिए भी बेहद आवश्यक है। अभी भी समय है, देश की राजनीति को सही दिशा की ओर मोड़ा जा सकता है नि:संदेह इसके लिए स्वतंत्र प्रेस की भूमिका जरूरी हैं वही भारतीय लोकतंत्र में पनपी विकृति राजनीतिक संस्कृति को पूरी तरह बदल सकता है। समस्या यह है कि लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहलाने

Volume - 7 | Issue - 3 | March - 2017 | ISSN - 2249-555X | IF : 4.894 | IC Value : 79.96

वाली मीडिया भी स्वतंत्र नहीं है। वह नेताओं के संकीर्ण स्वार्थों के चक्रव्यूह में फसे हुए हैं। अगर वह सही खबर जनता के बीच पहुँचाते तो एक स्वस्थ जनमत का निर्माण होता। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19 (क) में अभिव्यक्ति का अधिकार दिया गया है और इसी में ही प्रेस की स्वतंत्रता भी निहित है, लेकिन भारतीय लोकतंत्र मे प्रेस के अधिकारों पर कटौती करने की बहस छिड़ गई है क्योंकि वर्तमान राजनीति में उपजी विसंगतियों को जनता के समक्ष प्रेस मीडिया अपने तमाम तकनीकों के माध्यम से उजागर कर रही है। चाहे अनिरूद्ध बहल का तहलका स्टिंग ऑपरेशन के माध्यम से प्रश्नों को संसद में उठाने के बदले सांसदों की घुसखोरी या बहुमत साबित के बदले लहराते नोट।

समयानुसार प्रेस व मीडिया तकनीकी में परिवर्तन आया अब समसामयिक परिस्थितियों में तमाम न्यूज चैनल, इंटरनेट, मोबाइल, वीडियो सर्विलेस जैसी तकनीकियों से मिनटों में देश के किसी एक कोने से दूसरे कोने में घटनाओं को प्रसारित किया जा सकता है।

भारतीय राजनीति में डकैत, लठैत, सामन्त, आलाकमान जैसे शब्दों का राजनैतिक विमर्श में बाहुल्य बेहद चिन्ताजनक है। चाहे हम एटम बम का निर्माण कर ले या रॉकेट छोड़े, अभी भी आधुनिकता की मंजिल से काफी दूर खड़े हैं। हमारा लोकतंत्र भी एक ऐसा शिशु है जिसे देख–रेख की जरूरत है, इसका दायित्व जागरूक जनता और स्वस्थ भावनाओं के प्रति समर्पित मीडिया ही कर सकती है।

आज समाचार पत्र जनमत के निर्माण की नहीं, बल्कि जनमत के भटकाव की प्रक्रिया को गतिशील बनाने में सहयोगी बन रहे हैं। पत्रकारों, राजनीतिज्ञों, नौकरशाहों, औद्योगपतियों की चौकड़ी द्वारा जनसामान्य के ध्यान को मूलभूत मुद्दों से हटाकर सतही समस्याओं पर केन्द्रित किया जा रहा है। समाचार पत्रों में जातीय एवं धार्मिक नेताओं के प्रभाववश सामाजिक एवं धार्मिक मतभेदों को उभारने वाली खबरें प्रकाशित होती हैं तथा वास्तविक सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के कार्यों एवं अपीलों की उपेक्षा की जाती है। मीडिया को यह अधिकार है कि वह प्रशासन की विफलताओं तथा भ्रष्ट अधिकारियों अथवा कर्मचारियों के कारनामो का पर्दाफाश करें। यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय संविधान में दी गई अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जितना दुरूपयोग मीडिया द्वारा किया जा रहा है, उतना किसी अन्य के द्वारा नहीं किया गया। मीडिया को उस तथ्य पर ध्यान देना होगा कि भारत में अनेक राजनीतिक दल क्षेत्रीय, पृथकतावादी और संकीर्ण आधारों पर गठित हैं। इन राजनीतिक दलों के द्वारा नागरिकों में राष्ट्रीय दृष्टिकोण उत्पन्न करने के बजाए उनमें ऐसे संकुचित दृष्टिकोण को जन्म दिया जिससे नागरिक स्वस्थ लोकमत के निर्माण का कार्य कर ही नहीं पाते। इस स्थिति का मुकाबला राष्ट्रीय टीवी चैनल अधिक आसानी से कर सकते हैं।

वस्तुत: मीडिया और राजनीति के संदर्भ में यह स्थापित हो गया है कि राजनीति सर्वाधिक मीडिया का प्रयोग करती है क्योंकि लोकतंत्र में इसके बिना जनमत का निर्माण नहीं होता। मीडिया ही राजनीतिक पॉवर का प्रतीक बन चुका है। मीडिया की शक्ति लोगों की राजनीतिक प्राथमिकता को तय करती है और यही मीडिया और राजनीति का एक महत्वपूर्ण आधार बन जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, प्रमोद कुमार: भारत के विकास की समस्याएं और समाधान, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद – 1997
2. विभिन्न पत्र – पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख एवं विशेषज्ञों के साक्षात्कार से संकलित सामग्री।
3. गुप्ता, कमलेश: लोक प्रशासन (सम – सामयिक मुद्दे) कल्पना प्रकाशन, दिल्ली – 2013
4. गोस्वामी, भालचन्द्र: विधि और सामाजिक न्याय अभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ़ – 2012
5 त्रिपाठी, ममता मणि: समकालीन भारतीय राजनीति के मुद्दे समस्या एवं समाधान, भारती पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, फैजाबाद (उ.प्र.) 2013
6. दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, जनसत्ता, पंजाब केसरी, अमर उजाला, दैनिक ट्रिब्यून आदि समाचार पत्रों के संपादकीय आलेख।
7. पांञ्चजन्य, कामदनी, रसरंग, इण्डिया टुडे, तहलका, सरिता, आउटलुक आदि पत्रिकाओं से प्राप्त अध्ययन सामग्री।
8. रूपा, मंगलानी: भारतीय शासन एवं राजनीति, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 2007
9. *तिलक, रघुकुल: लोकतंत्र: स्वरूप एवं समस्या*, हिंदी ग्रंथ अकादमी, उत्तरप्रदेश, लखनऊ।
10. जैन, श्रीमती राजेश: भारतीय राजनीति के नए आयाम, विश्व भारती पब्लिकेशन्स।
11. पामर, नार्मल, डी: दि इण्डियन पॉलिटिकल सिस्टम, जार्ज एलेन एंड अनविल लि., लंदन।
12. जैन, श्रीमती राजेश: भारतीय राजनीति के नए आयाम, विश्व भारती पब्लिकेशन्स।
13. मधुलिमये: भारतीय राजनीति में अन्तविरोध।
14. आहूजा, राम: सामाजिक समस्याएं: रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
15. सोमरा, कर्णसिंह: साम्प्रदायिक सदभाव एवं राजनीतिक चेतना, प्रिन्टवेल, जयपुर – 1992
16 सिंह, महेश्वर: भारतीय लोकतंत्र समस्याएं व समाधान, साहित्यगार, जयपुर – 2000
17. पाण्डेय, अरूण: हमारा लोकतंत्र और जानने का अधिकार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली – 2000
18. राय, अरूंधति: कठघरे में लोकतंत्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली – 2012
19. सेंगर, शैलेन्द्र: भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियां, गुंजन प्रकाशन, नई दिल्ली – 2009